Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 3

मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति, साहित्य और भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास	1
2	मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास	11
3	13-15वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश	15
4	1857 का विद्रोह	34
5	स्वतंत्रता आंदोलन में मध्य प्रदेश का योगदान	49
6	मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक पहलू	54
7	मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल	90
8	मध्य प्रदेश में वन	121
9	म.प्र. के वनोपज	128
10	मध्य प्रदेश की नदी और जल निकासी प्रणाली	131
11	मध्य प्रदेश के भौतिक विभाग	144
12	मध्य प्रदेश में जलवायु, मौसम और वर्षा	148
13	मध्यप्रदेश की मिट्टी	152
14	मध्य प्रदेश के प्राकृतिक और खनिज संसाधन	161
15	मध्य प्रदेश में कृषि क्षेत्र	172
16	मध्यप्रदेश के प्रमुख जल संसाधन	188
17	मध्यप्रदेश में ऊर्जा के पारंपरिक और गैर पारंपरिक श्रोत	193
18	मध्य प्रदेश के औद्योगिक और सेवा क्षेत्र	200
19	मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी	213

1 CHAPTER मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास

- **डिंडोरी के घुघुआ राष्ट्रीय उद्यान** में मिले **6.5 करोड़** वर्ष **पुराने जीवाश्म** ने साबित कर दिया कि मध्य प्रदेश उतना ही प्राचीन है जितनी की दुनिया ।
- **धार के बाग** इलाके में 100 से ज्यादा **डायनासोर के अण्डों के जीवाश्म** मिले है।
  - वैज्ञानिकों ने इन जीवाश्मों के लगभग 7 करोड़ से 6.5 करोड़ वर्ष पुराने होने का अनुमान लगाया है। अंडे के अलावा, क्षेत्र में **डायनासोर के घोंसलों के जीवाश्म** भी पाए गए हैं।
- वर्ष 2003 में एक अमेरिकी वैज्ञानिक ने एक विशाल डायनासोर के जीवाश्मों की पहचान की थी, जिसे **"राजासौरस नर्मडेन्सिस"** नाम दिया गया था।
- सन् 1930 में **प्रोफेसर लाडकर** ने साबित किया कि **मध्यप्रदेश जुरासिक पार्क की भूमि** है, 1877 ई. में उन्हें जबलपुर के पास **टाइटेनोसॉर डायनासोर का जीवाश्म** मिला।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी **विलियम स्लीमैन** को **जबलपुर छावनी क्षेत्र में हजारों हड्डियाँ** मिली।
- सन् 1933 में, **मैटली ने जबलपुर के पास मानव आकार के डायनासोर** प्राप्त किये और इनका नाम जबलपुरिया रखा।
- भूवैज्ञानिक दृष्टि से, **मध्यप्रदेश गोंडवाना भूमि का एक भाग** है।

मध्यप्रदेश में पाषाण युग (40 लाख ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

- **नरसिंहपुर के पास भूतरा गाँव** में वैज्ञानिको को **पुरापाषाण युग का हथियार** मिला जो मध्यप्रदेश में सबसे पुराना माना जाता है।
- **बेतवा और नर्मदा की घाटी** से मिली **क्वार्टजाइट से बनी हाथ की कुल्हाड़ी**।
- **नर्मदा घाटी सर्वेक्षण में नरसिंहपुर के होशंगाबाद में प्राचीन जीवाश्म** मिले हैं।
- **हथनोरा में** मानव **नर्मदे नूर्नमदेनसिस की खोपड़ी** मिली है।
- **वाकणकर** को **चंबल घाटी के मंदसौर से उपकरण** मिले हैं।

आदमगढ़ (होशंगाबाद)

- नर्मदा नदी के तट पर **मेसोलिथिक स्थल**।
- गुहा चित्र के अवशेष मिले है।

भीमबेटका (रायसेन)

- यह एक **पुरापाषाण और मध्यपाषाण स्थल** है।
- 500 गुफाएँ पाई जाती हैं।

सिंगरौली

- कई गुफाएँ मिलीं उदाहरण के लिए **मांडा गुफाएँ और बाघ गुफाएँ** (धार)
- इन सभी गुफाओं के **चित्रों में लाल, सफेद, काले, पीले प्राकृतिक रंगों का प्रयोग** किया गया है।

कुंजन

- मध्य प्रदेश के **सीधी जिले में स्थित** कुंजन एक **नवपाषाण स्थल** है।
- भारत में नवपाषाण काल 2,600 से 800 ईसा पूर्व के बीच का काल है।
- इसे तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है -
  - **चरण- I** - कोई **धातु उपकरण नहीं** मिला।
  - **चरण- II -** सीमित मात्र में **ताँबे और कांसे के औजार** मिले है।
  - **चरण- III -** इसकी विशेषता **लोहे का उपयोग** है।

मध्य प्रदेश में कांस्य युग

- **एरन (सागर) :** कांस्य युग के औजार मिले थे- 2000 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व तक।
- **खदिनेमा (होशंगाबाद):** 3500 साल पुराना कांस्य युग
- **अकुरा; नागदा (उज्जैन):** महत्त्वपूर्ण कांस्य युग स्थल
- **महेश्वर- नवदाटोली (1660 ईसा पूर्व से 1440 ईसा पूर्व):** बुद्ध के ग्रंथ और प्रसिद्ध कांस्य युग की सभ्यता में इन दो शहरों का उल्लेख है।
- **टोंथर (रीवा) और भरहुत (सतना):** तीसरी और चौथी शताब्दी की शहरी सभ्यता मिली।

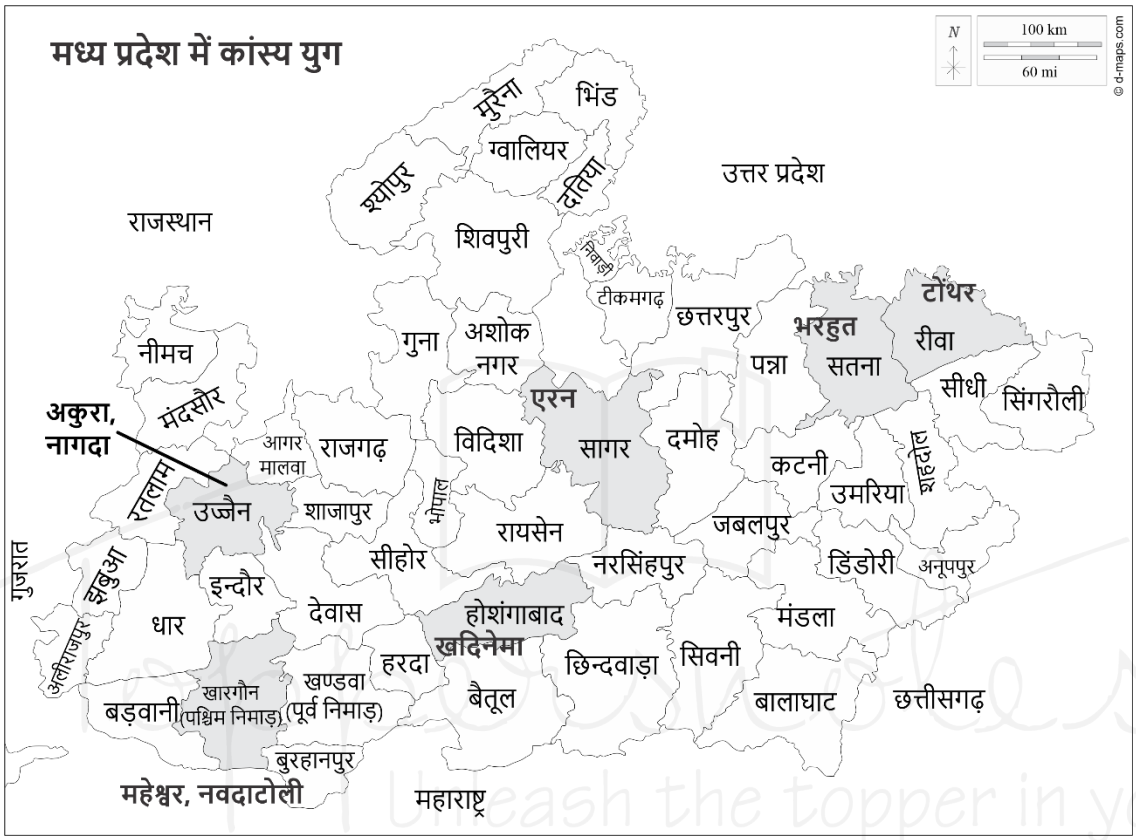

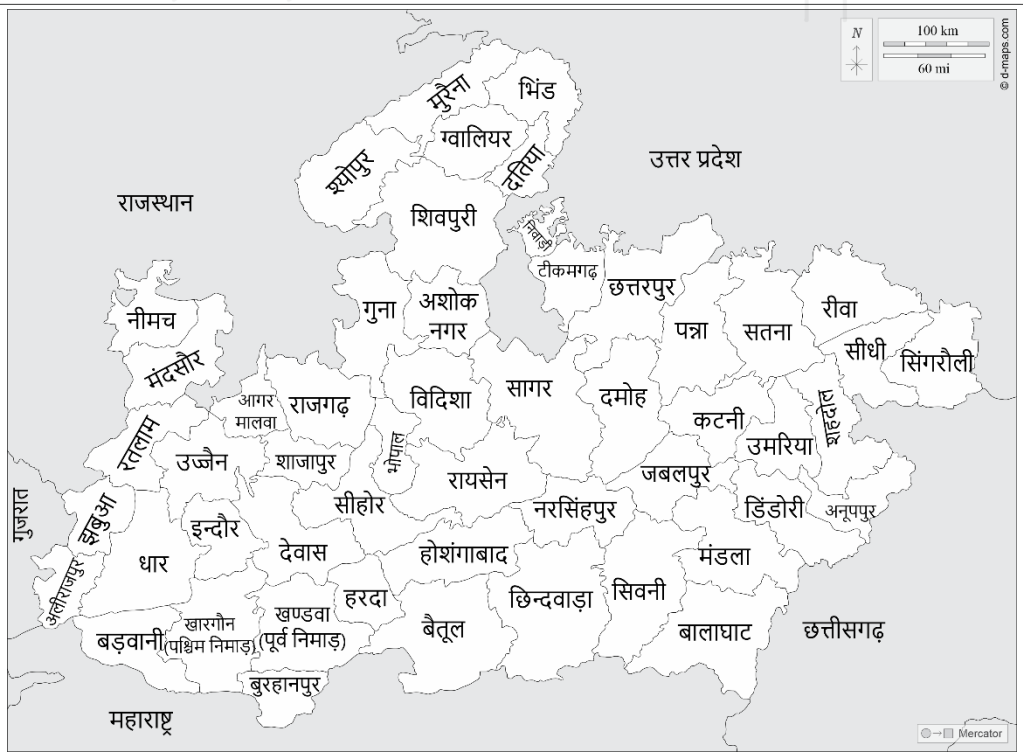

ताम्रपाषाण युग

- **कायथा (उज्जैन):** 1800-1300 ईसा पूर्व की अवधि की **ताँबे की कुल्हाड़ी; ज्योतिषी वराहमिहिर का जन्मस्थान हैं** ।
- **एरन (सागर):** प्राचीन नाम अरिकिनी, **सती का सबसे पुराना शिलालेख** मिला ,**ब्लैक-रेडवेयर, पेंटेडवेयर** मिला ।
- **नवदाटोली (महेश्वर) :** गोल आकार की मिट्टी की कुटिया, आयताकार चूल्हा, गेहूँ, चने की खेती ।
- **अवारा (मंदसौर): नवदाटोली** के समान, चित्रित **लाल-काले और भूरे-सफेद** रंग के बर्तन मिले ।
- **आजाद नगर-** मुसाखेड़ी (इंदौर): **ताम्रपाषाण स्थल** ।
- **डांगवाला -** यह उज्जैन से **32 किलोमीटर दूर बस्ती** में स्थित है, यह पिछली शताब्दी की खुदाई से अस्तित्व में आया था।
- **नागदा -** यह उज्जैन जिले में चंबल नदी के तट पर है। इस ताम्रपाषाण बस्ती से मिट्टी के बर्तन और छोटे पत्थर के हथियार भी मिले हैं।

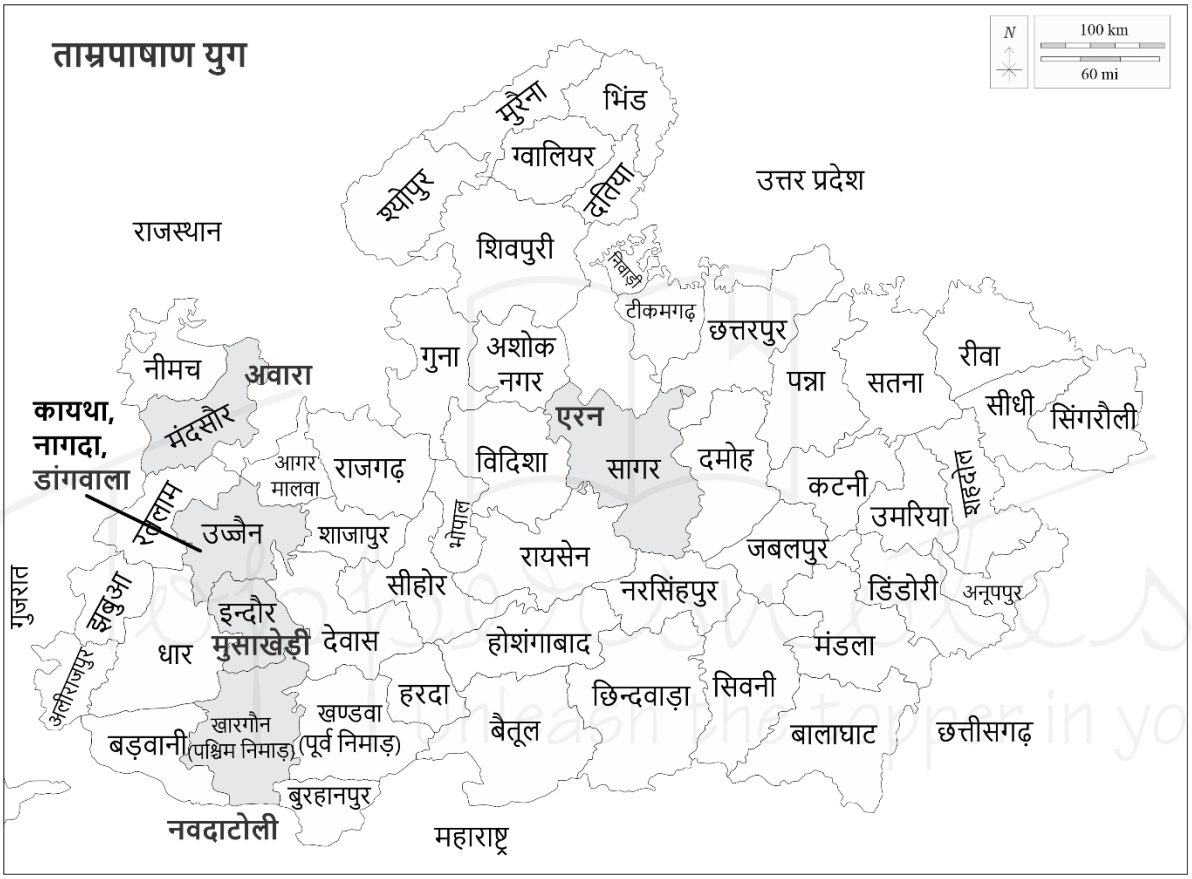

वैदिक युग

- वास्तव में, **आर्य संस्कृति** 1500-1000 ईसा पूर्व **ऋग्वैदिक काल** में उत्तर तक ही सीमित थी और बाद के **वैदिक काल** (1000-600 ई.) में,इसने विन्ध्याचल को पार कर मध्यप्रदेश में प्रवेश किया।
- मनु के 10 पुत्रों में से एक **करुष** ने **बघेलखंड में करुष वंश** की स्थापना की।
- **चंद्रवंश** - मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ और उन्होंने इस वंश की स्थापना की। **सोम का शासन बुंदेलखंड** में था।

इक्ष्वाकु वंश

- मनु के पुत्र **इक्ष्वाकु** के नाम से इस वंश की स्थापना हुई, जिसका शासकीय क्षेत्र **दंडकारण्य था।**
- इस वंश के प्रतापी **राजा मान्धाता** ने अपने पुत्र **पुरुकुत्स** को मध्य भारत के नागा राजाओं (गंधर्वों के विरुद्ध) की सहायता के लिए भेजा।
- उसी वंश के **मुचकुंड** ने अपने पूर्वज राजा मान्धाता के नाम पर **ऋक्ष और** परिपात्र **पर्वत श्रृंखलाओं** के बीच नर्मदा के तट पर **मान्धाता** (ओंकारेश्वर - मान्धाता) **शहर** की स्थापना की।

- कुछ इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि लंका जबलपुर से 15 किलोमीटर दूर स्थित थी।
- विदिशा पर शत्रुघ्न के पुत्र **शत्रुघति का शासन** था।
    - कालिदास के रघुवंश के अनुसार, शत्रुघन ने **यादवों** को हराया और अपने पुत्र शत्रुघति को **विदिशा के राजा** के रूप में स्थापित किया।
- महाभारत युद्ध के दौरान, उज्जैन के राजकुमार **बिंद और अनुविंद** तथा **राजा नील** (माहिष्मती) कौरवों की ओर से लड़े थे।
- जबलपुर के पास **तेवर को महाभारत में त्रिपुरी के रूप में वर्णित** किया गया है।

महाजनपद युग

अवंती (उज्जैन)

- **दीपवंश** के अनुसार, राजा अच्युतगामी ने **उज्जैन शहर** की स्थापना की थी।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में अपने यात्रा वृत्तांत में **उज्जैयिनी** (उ-शे-येन-ना) का उल्लेख किया है।
- **चण्डप्रद्योत महासेन** (बुद्ध के समकालीन) के शासन काल में उज्जैन राजधानी अवंती और माहिष्मती के साथ महाजनपदों का हिस्सा था।
- बिम्बसार ने चण्ड प्रद्योत को ठीक करने के लिए अपने वैद्य जीवक को भेजा।
- शिशुनाग (मगध) ने नंदीवर्मन (उज्जैन के राजा) को हराया और इसे मगध साम्राज्य में मिला दिया।

चेदि महाजनपद

- **राजधानी**: **सुक्तिमती** या **सोथिवती**, यह बुंदेलखंड का एक हिस्सा थी और **खारवेल के तहत कलिंग की एक शाखा** थी। बाद में मगध ने चेदि पर कब्जा कर लिया।
- शिशुपाल **चेदि महाजनपद** का राजा था जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था। उसके बाद उसका पुत्र **धृष्टकेतु** चेदि देश का राजा बना।
- **महाभारत युद्ध** में श्री धृष्टकेतु ने पांडवों का साथ दिया था।

महाजनपद के दौरान अन्य क्षेत्र

- वत्स - ग्वालियर
- चेदि — खजुराहो
- अनूप - निमाड़ (खंडवा)
- दर्शण - विदिशा
- तुन्डीकेर — दमोह
- नलपुर - नरवर (शिवपुरी)

मौर्य राजवंश

- **पुरुगुप्त** चंद्रगुप्त के शासन के दौरान **मालवा क्षेत्र का राज्यपाल** था।
- बिन्दुसार द्वारा अशोक को **अवंती का राज्यपाल** नियुक्त किया गया था।
- अशोक ने उज्जैन पर 11 वर्षों तक राज्यपाल के रूप में शासन किया।
- **गुर्जर** (दतिया), **रूपनाथ** (जबलपुर), **सांची** (रायसेन), **पान गुरड़िया** (सीहोर) के **शिलालेखों** से साबित होता है कि अशोक ने इन क्षेत्रों पर शासन किया था।
- गुर्जर शिलालेख से अशोक का नाम **देवनामप्रिय राजा अशोक** मिला।
- अशोक ने **बेसनगर** (विदिशा) **की श्रीदेवी/महादेवी से** विवाह किया की।
- कुणाल अशोक के चार पुत्रों में से एक थे, उन्होंने उज्जैन में 8 वर्षों तक शासन किया।
- अशोक की मृत्यु के बाद भी, वह प्रांतीय शासक के रूप में कार्य करता रहा। इसके बाद उसका पुत्र **सम्प्रति उज्जैन का प्रान्तीय शासक** बना।
- सम्प्रति ने धीरे-धीरे दक्षिण चौकी के आस-पास के क्षेत्र को जीत लिया और उस पर कब्जा कर लिया।

मध्य प्रदेश में स्तूप

- **उज्जैन का बौद्ध स्तूप:** बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अवंती का अधिग्रहण हुआ, जिस पर वैश्य टेकरी में स्तूप बनाया गया। यह अब तक मिले स्तूपों में सबसे बड़ा है।
- **सांची** - यहाँ मुख्य रूप से तीन स्तूप हैं और अन्य छोटे स्तूप भी हैं, सांची को तीसरी शताब्दी में **वैदिक गिरि** या **चैत्यगिरी** कहा जाता था और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में **काकवान कहते थे।**
  - **सर जॉन मार्शल** ने 1912 ई. और 1920 ई. के बीच **सांची स्तूप का जीर्णोद्धार** करवाया।
  - **स्तूप क्रमांक 1** जो बहुत महत्व का बताया जाता है, उसमें **सारिपुत्र** और **महामोगली की अस्थियाँ** रखी गई हैं।
- **सतधारा स्तूप** - सांची के पास एक **प्राचीन बौद्ध केंद्र।** कनिंघम ने इसकी खोज **1853** ई. में की थी, अब तक यहाँ **40 स्तूप और 17 विहार** मिले हैं।
- **अंधेर का स्तूप** - विदिशा से 12 किलोमीटर दूर अंधेर नामक स्थान से तीन स्तूपों के अवशेष मिले हैं।
- **सोनारी स्तूप** - सांची से 9 किलोमीटर दूर **8 स्तूपों के अवशेष** यहाँ मिले हैं, जिनमें से **स्तूप नंबर 1** सबसे बड़ा है, जो **240 फीट चौकोर प्रांगण** में स्थित है।
  - **भोजपुर के स्तूप** - विदिशा से 10 किलोमीटर की दूरी पर 37 अवशेष मिले हैं।
  - इसी तरह रायसेन जिले के **खरवई से दो स्तूपों और विहारों के अवशेष** मिले हैं।
- **भरहुत का स्तूप** मध्य प्रदेश में **सतना के पास नागोद** में स्थित है, इसकी खोज 1873 ई. में हुई थी।
- **देउर कोठार** रीवा जिले की तहसील के अंतर्गत आता है, जिसे अशोक के समय तीसरी शताब्दी में बनाया गया था।
- **तुमैन स्तूप** अशोक नगर में स्थित है, जो विदिशा और मथुरा को जोड़ने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था। प्राचीन काल में इसे **तुम्ब्वन** कहा जाता था।
- **कसरावद के स्तूप** : खरगोन जिले में स्थित कसरावद में 11 स्तूप मिले हैं।
- **महेश्वर और नवदाटोली**: महेश्वर की पहचान प्राचीन **दक्षिणी अवंती की राजधानी माहिष्मती** से हुई है।
  - यह नगर प्रतिष्ठान और उज्जैन के बीच दक्षिणी सड़क पर स्थित था।
- **पान गुरड़िया** से परिक्रमा पथ वाला एक स्तूप मिला है।

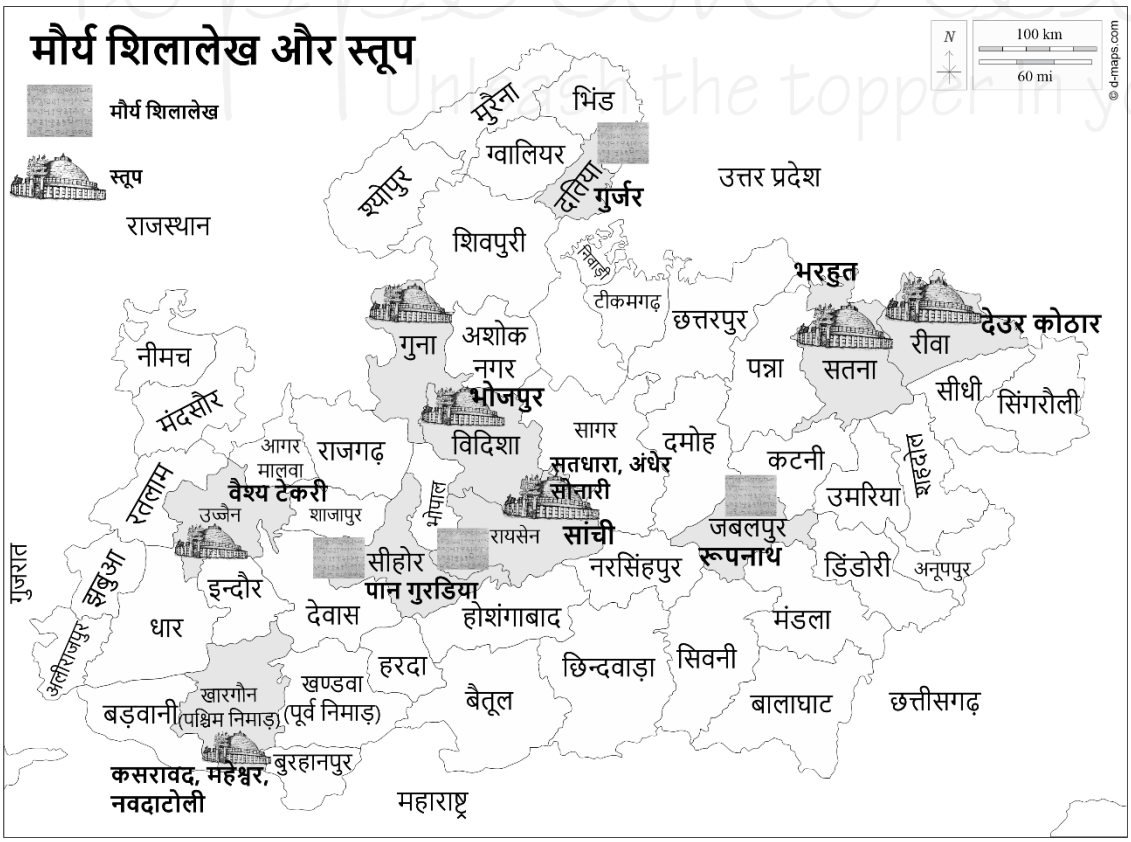

मौर्यों के बाद

शुंग राजवंश

- **मालविका अग्निमित्रम** के अनुसार, अग्निमित्र ने विदिशा पर अपने पिता **पुष्यमित्र शुंग** के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया था।
- राजा भागवत के शासन के दौरान, **हेलियोडोरस** (एंटीलसीदास (तक्षशिला के इंडो-ग्रीक राजा)) विदिशा आए और **गरुड़ स्तम्भ की स्थापना** की यह स्थानीय रूप से **खाम बाबा** के नाम से जाना जाता है।
- **भरहुत स्तूप** (सतना) शुंग काल के दौरान निर्मित।
- इस दौरान **सांची** की बाहरी दीवार भी बनाई गई थी।

सातवाहन राजवंश

- सातवाहनों ने **कण्व वंश** को समाप्त करने से पहले **27 ईसा पूर्व** में शासन किया था।
- **सांची स्तूप की वेदिका** पर उत्कीर्ण अभिलेख से मालवा पर शातकर्णी से पहले के शासन से संबंधित सूचना मिलती है।
- कुछ सातवाहन सिक्के **देवास**, **उज्जैन**, **जमुलिया**, **तेवर**, **भेड़ाघाट** से प्राप्त हुए हैं।
- पुराणों के अनुसार, सिमुक ने पूर्वी मालवा (विदिशा) क्षेत्र पर शासन करने वाले **कण्वों और शुंगों की शक्ति** को समाप्त करके **सातवाहन वंश** की स्थापना की।
- शातकर्णी के राज्यों में **अनूप** (निमाड़), **आकर** (पूर्वी मालवा) और **अवंती** (पश्चिम मालवा) शामिल थे।
- **सातवाहन का अभिलेख** मध्यप्रदेश के सांची से प्राप्त हुआ है।
- उसके पुत्र पुलुमावी की **कर्दमन वंश** (सीथियन राजवंश) से हार हुई।
- शातकर्णी प्रथम को **सातवाहन वंश का सबसे शक्तिशाली राजा** माना जाता है।

भारत-यूनानी शासक 200 ईसा पूर्व से 50 ईसा पूर्व तक

- डेमेट्रियस के उत्तराधिकारी, **मिनांडर** (मिलिंद) ने मध्यप्रदेश पर हमला किया इसकी जानकारी उसके **बालाघाट के सिक्कों** से मिलती है।
- **नागसेन** ने उसे **बौद्ध धर्म में परिवर्तित** कर दिया।

शक शासन

- शकों ने भारत के पश्चिमी भाग से **भारत-यूनानी शासन** की जगह ली और 4 क्षत्रपों अर्थात् **पंजाब**, **मथुरा**, **उज्जैन** और **नासिक** की स्थापना की।
- शकों की संयुक्त शासन प्रणाली में एक परंपरा थी कि वरिष्ठ शासक "**महाक्षत्रय**" की उपाधि धारण करता था और अन्य कनिष्ठ शासकों को "**क्षत्रय**" कहा जाता था।

उज्जैनी क्षत्रप (कर्दमक वंश)

- **चष्टन** द्वारा स्थापित और बाद में **रुद्रदामन** द्वारा शासित।
- **चष्टन वंश** का सबसे शक्तिशाली शासक **नहपान** था।
- वह सातवाहन राजा **गौतमी पुत्र शातकर्णी** के समकालीन थे।
- नासिक शिलालेख से ज्ञात होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी ने पूर्वी मालवा तथा पश्चिमी मालवा द्वारा **नहपान** को परास्त किया।
- चंद्रगुप्त '**विक्रमादित्य**' द्वारा **अंतिम कर्दमक राजा रुद्रसेन** की हत्या की गई थी।

गुप्त काल

- गुप्त काल के दौरान समुद्रगुप्त ने **सागर**, **दमोह**, **जबलपुर** के माध्यम से दक्षिण की ओर प्रवेश किया तथा उसने **शक राजा श्रीधरवर्मन** को हराया और सागर में **एरण शिलालेख** अंकित करवाया।
- जिसका प्रमाण उदयगिरि में **जैन गुफा** में मौजूद है, जिसके लेख में **महाराजाधिराज राम गुप्त** का उल्लेख है, ताँबे के सिक्के पूर्वी मालवा में **विदिशा और एरण** से प्राप्त हुए हैं।

- विदिशा के निकट दुर्जनपुरा गाँव से चौथी शताब्दी की तीन मूर्तियाँ मिलती हैं, जिन पर महाराजाधिराज **रामगुप्त** का उल्लेख **ब्राह्मी लिपि** में मिलता है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय ने शक राजा को हराया और **उज्जैनी** को अपनी **दूसरी राजधानी** के रूप में स्थापित किया।
- **प्रथम राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- **उदयगिरि** (विदिशा) से **प्राप्त शिलालेख** से चंद्रगुप्त द्वितीय के वीरसेन (युद्ध और शांति) मंत्री के बारे जानकारी मिलती है।
- उदयगिरि गुफाओं का निर्माण गुप्त राजाओं द्वारा किया गया था, जहाँ **वराह अवतार** महत्त्वपूर्ण है।
- **धार की बाघ गुफाओं** का संबंध भी गुप्त वंश से है।
- जबलपुर में स्थित **तिगवा गुप्त काल का एक महत्त्वपूर्ण विष्णु मंदिर** है।

गुप्तकाल के अभिलेख

मंदसौर शिलालेख

- गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय से संबंधित यह अभिलेख **मंदसौर** (दासपुर) से प्राप्त हुआ है।
- संस्कृत में **वत्सभट्टी** द्वारा लिखित हैं।
- इस शिलालेख में बंधुवर्मन के शासनकाल का उल्लेख मिलता है।

तुमैन शिलालेख

- **अशोकनगर** जिले में स्थित है।
- **कुमारगुप्त** के बारे में जानकारी मिलती है।

सुपिया शिलालेख

- **रीवा** में स्थित है।
- इसमें घटोत्कच के समय से गुप्त राजा के कालक्रम का वर्णन है।

एरण शिलालेख

- यह सागर जिले में स्थित है।
- हूणों के आक्रमण की जानकारी देता है

सांची शिलालेख

- इसमें हरि स्वामिनी द्वारा **आर्य संघ** को दिए गए दान का उल्लेख है।

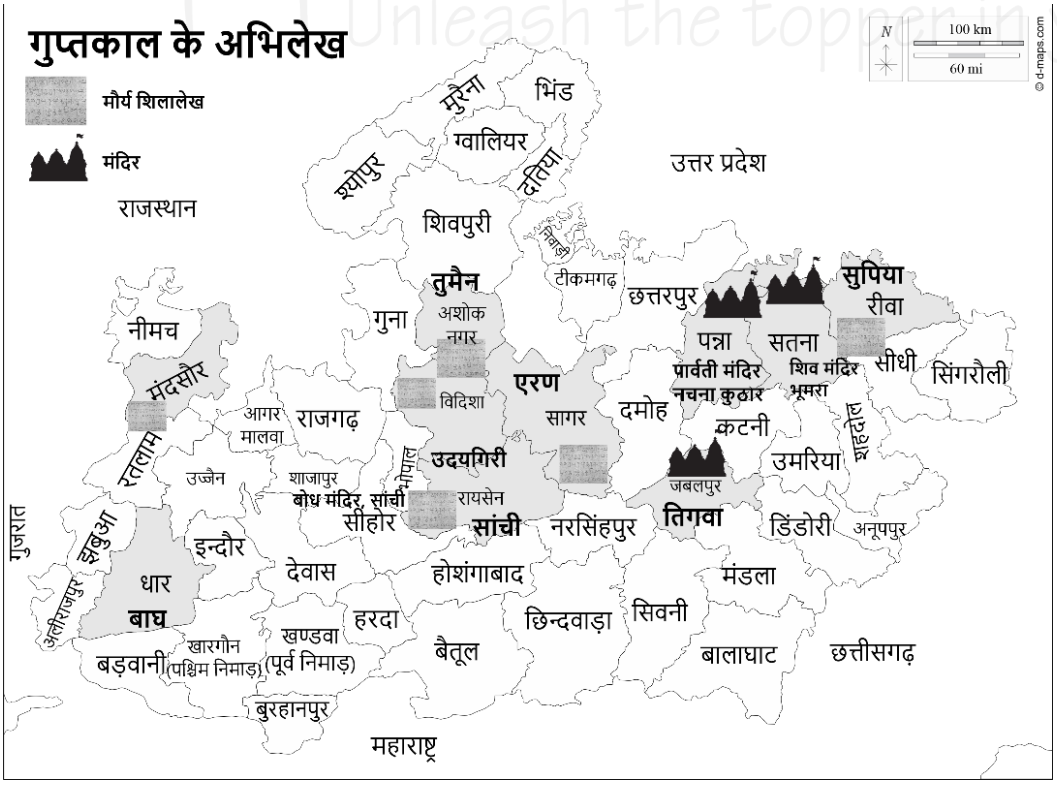

गुप्त काल के मंदिर

- तिगवा का विष्णु मंदिर - जबलपुर
- भूमरा का शिव मंदिर - नागौद (सतना)
- पार्वती मंदिर नचना कुठार(अजय गढ़ पन्ना)
- बोध मंदिर सांची (रायसेन)
- शिव मंदिर - खोह (नागौद)

अन्य राजवंश

वाकाटक वंश (150 ई. से 450 ई.)

- विंध्यशक्ति (250-270 AD) द्वारा **विदिशा में स्थापित।**
- महत्त्वपूर्ण **राजा प्रवरसेन** थे जिन्होंने **4 अश्वमेध यज्ञ** किए और पवाया (ग्वालियर) के **नाग वंश** के साथ **वैवाहिक संबंध** स्थापित किये।
- एक अन्य राजा प्रवरसेन द्वितीय ने **महाकाव्य सेतुबंध** लिखा था।

हूण आक्रमण

- 5वीं शताब्दी में **हूणों के नेता मिहिरकुल** ने मध्यप्रदेश के पंजाब से सागर तक विजय प्राप्ति के लिए आक्रमण किये।
- **तोरमण** के शासन के प्रथम वर्ष के अभिलेख सागर के निकट **एरण** में उपलब्ध **विशाल वराह मूर्ति** से मिलते हैं।
- तोरमण के पुत्र **मिहिरकुल** ने ग्वालियर के आस-पास शासन किया
- मंदसौर के **औलीकर वंश** ने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड़ दिया।

मंदसौर के औलीकर राजवंश

- दशपुर में **जयवर्मन** द्वारा स्थापित।
- एक अन्य राजा बंधुवर्मन ने **कुमारगुप्त की सर्वोच्चता** स्वीकार की।
- नरवर्मन के नाम पर पहला शिलालेख मिला।
- यशोवर्मन ने **अंतिम हूण राजा मिहिरकुल** को हराया और भारत से हूणों के शासन को समाप्त कर दिया
- मालवा क्षेत्र का नाम **औलीकरों** द्वारा दिया गया था।

परिव्राजक राजवंश

- परिव्राजक ने पन्ना के पास बुंदेलखंड में शासन किया।
- प्रथम राजा- **देवदया**
- प्रमुख राजा- **हस्तिन**
- हस्तिन के शिलालेख- **खोह**, **जबलपुर** और **मझगंवा**

उच्चकल्प के शासक

- उच्च कल्प का आधुनिक भाग **उंचेहरा** (सतना) है।
- ये परिव्राजक महाराजाओं के पड़ोसी थे।
- इस वंश के **प्रथम राजा देवादय** थे।

पुष्यभूति राजवंश/वर्धन साम्राज्य

- **राजा राज्यवर्धन** को मालवा के राजा देवगुप्त ने मार दिया था लेकिन अगले राजा **हर्षवर्धन** ने बदला लिया और नर्मदा के दक्षिणी तट पर देवगुप्त को हराया।

शैल वंश

- आठवीं शताब्दी में महाकौशल के पश्चिमी भाग में **शैल वंश** की स्थापना।
- **राधोली** (बालाघाट जिला) से प्राप्त एक ताँबे की प्लेट से **शैल वंश की वंशावली** प्राप्त होती है।
- प्रथम राजा - **श्रीवर्धन**, उसका पुत्र **पत्यु वर्धन** जिसने **गुर्जरों पर विजय** प्राप्त की।

मौखरी वंश

- मध्यप्रदेश के पूर्वी निमाड़ जिले में, **असीरगढ़ किले** के महाराज सर्व वर्मन का एक **ताम्र मुहर अभिलेख** प्राप्त हुआ है, जिसके संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि **मौखरी राज्य पूर्वी निमाड़ जिले** तक फैला हुआ था।

मैकाल के पांडव वंश

- **अमरकंटक** और वर्तमान **अनूपपुर जिले** के आस-पास के क्षेत्र को **मैकाल** के नाम से जाना जाता था।
- पांडव वंश के राजाओं के बारे में जानकारी **राजा भरत बल के बसनी ताम्र पत्र** से प्राप्त होती है।
- पहला राजा- **जयबल**, उसका पुत्र वत्सराज।
- बाद में गुप्त वंश की शक्ति कम होने के कारण स्थिति का लाभ उठाकर राजा स्वतंत्र हो गया।
- अंतिम सम्राट – **भरतबल**

कलचुरी राजवंश

- कलचुरी **हैहय वंश की एक** शाखा है, मध्यप्रदेश के प्राचीन इतिहास में कलचुरी वंश का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- मध्यप्रदेश में कलचुरी वंश की **दो प्रमुख शाखाएँ** - **माहिष्मती** की कलचुरी और **त्रिपुरी** की कलचुरी शाखाएँ थीं ।

माहिष्मती का कलचुरी वंश

- इस कलचुरी वंश की प्राचीन **राजधानी माहिष्मती** थी।
- माहिष्मती में मध्यप्रदेश राज्य के **महेश्वर**, **ओंकारेश्वर मन्धाता** और **मंडला** नामक तीन स्थान शामिल थे।
- इसके तीन प्रमुख राजाओं - **कृष्णराज**, **शंकरगढ़** और **बुद्ध राजा** के नाम मिलते हैं।

त्रिपुरी का कलचुरी

- चालुक्यों द्वारा पराजित होने के बाद, बुद्धराज के वंशज माहिष्मती को छोड़कर **चेदि देश** में भाग गए और **त्रिपुरी में अपनी राजधानी** स्थापित की।
- त्रिपुरी शाखा के **संस्थापक वामराज** थे।
- शासक **कोक्कल प्रथम** इस वंश का एक सक्षम और प्रतापी राजा था।
- गंगदेव के पुत्र **लक्ष्मी कर्ण** या **कर्ण देव**, कलचुरि राजाओं में सबसे प्रतापी राजा थे।
- कर्ण देव को **हिंद का नेपोलियन** कहा जाता है।
- कर्ण देव ने जबलपुर के पास अपने नाम पर **कर्णावती शहर** की स्थापना की और **अमरकंटक के मंदिरों** का निर्माण किया।
- कलचुरी वंश का **अंतिम शासक विजय सिंह** था।

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट वंश की दो शाखाएँ सातवीं से दसवीं शताब्दी तक मध्य प्रदेश में रहीं।
- **पहली शाखा**
  - इस वंश की एक शाखा ने **बैतूल**-**अमरावती क्षेत्र** पर शासन किया।
  - राज्य की चार शाखाएँ - **दुर्गाराज**, **गोविंद राज**, **स्वामीराज** और **नन्नराज।**
  - **तीतर खेड़ी** और **मुलताई** (बैतूल) से नन्नाराज के दो **ताम्र पत्र** प्राप्त होते हैं।
  - दंतिदुर्ग ने अपने शासन काल में इस शाखा को मिला लिया होगा।
- **दूसरी शाखा**
  - इसका शक्तिशाली **राजा दंतिदुर्ग** (744 ई.) था।
  - उन्होंने महानदी और नर्मदा के आस-पास कई युद्ध लड़े।
  - उज्जैन के **गुर्जर शासकों** ने राष्ट्रकूटो को हराया और शासन किया।
  - उन्होंने लगभग 750 ई. में उज्जैन में **हिरण्यगर्भ यज्ञ** करके खुद को स्थापित किया।

- दंतिदुर्ग के उत्तराधिकारी कृष्ण ने मध्य प्रदेश के पूरे **मराठी क्षेत्र पर अधिकार** कर लिया

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- इस वंश का **प्रथम शासक हरिवंश** था परन्तु इस वंश की स्थापना वास्तविक रुप से **नागभट्ट प्रथम** ने की।
- इसने अरबों को हराया और मालवा को **मुस्लिम आक्रमण** से बचाया
- यह दंतिदुर्ग द्वारा पराजित हुआ।

नाग वंश

- नाग वंश का उदय **ग्वालियर**-**विदिशा क्षेत्र** में हुआ,
- पुराणों में विदिशा में शासन करने वाले नाग-वंश के राजाओं में **शेष**, **भोगिन**, **सदाचंद्र**, **धन धर्म**, **भूतनंदी**, **शिशु नंदी** और **यशोनंदी** का उल्लेख है।
- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में, विदिशा ग्वालियर क्षेत्र के एक नए **नाग वंश का उदय** हुआ।
- **संस्थापक**-वृषनाग, जिसका एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है
- वृषनाग के बाद, **भीमनाग** शासक था, जिसने अपनी राजधानी को **विदिशा से पद्मावती** (ग्वालियर) **स्थानांतरित** कर दिया।
- इस वंश के अंतिम शासक **गणपतिनाग** को गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने पराजित कर **नाग वंश का अंत** किया था।

बोधि और महा राजवंश

- दूसरी-तीसरी शताब्दी ई. में, वर्तमान तेवर (जबलपुर) के त्रिपुरी क्षेत्र पर **बोधि वंश के राजाओं** का शासन था।
- त्रिपुरी की खुदाई से प्राप्त **मिट्टी**-मुद्रा अंकन में चार शासकों- श्री **बोधि**, **वासु बोधि**, **चंद्र बोधि** और **शिव बोधि** के नामों का उल्लेख है।
- इस समय के आस-पास मध्य प्रदेश के **बुंदेलखंड क्षेत्र** पर **महावंश के शासकों** का शासन था।
- इस वंश का प्रथम शासक **भीमसेन** था।
- कौशाम्बी और भाटा के अलावा बाँधवगढ़ जिले के उमरिया से महावंश के शासकों के सिक्के, मुहर और शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

वाकाटक वंश

- वाकाटक वंश की उत्पत्ति के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है।
- फिर भी कुछ इतिहासकार बुंदेलखंड को **वाकाटक वंश का मूल स्थान** मानते हैं।
- वाकाटक वंश के संस्थापक **विंध्य शक्ति** थे, जिन्हें **पुराणों** में मूल रूप से **विदिशा का शासक** कहा गया था।
- रुद्र सेन प्रथम के राज्य में **जबलपुर** और **बालाघाट** शामिल थे।
- रुद्र सेन प्रथम की **राजधानी नागपुर** थी।
- वाकाटक राज वंश के अंतिम शासक **पृथ्वी सेन द्वितीय के अभिलेख** की प्राप्ति बालाघाट जिले से हुई है।

2 CHAPTER मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मालवा का परमार राजवंश

- **परमार अभिलेखों** में परमारों की उत्पत्ति **ऋषि वशिष्ठ** द्वारा **'अबू पर्वत'** पर आयोजित **यज्ञ वेदी** से हुई बताई गई है।
- अन्य अभिलेख - **'उदयपुर प्रशस्ति'**, **'नागपुर प्रशस्ति'**, **'वसंतगढ़ अभिलेख'**, **'पट नारायण अभिलेख'**, **'जैन अभिलेख'**

उपेंद्र

- उन्हें राष्ट्रकूट सम्राट **गोविंद-तृतीय** द्वारा शासक नियुक्त किया गया था।
- **'उदयपुर प्रशस्ति'** में उनकी प्रशंसा की गई।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाकर वह **'अवंती' के शासक** बने।
- 818 ई. में **गोविंद तृतीय** की मृत्यु हो गई, जिसका लाभ उठाकर इन्होंने राज्य का विस्तार करना शुरू कर दिया और **मालवा पर अधिकार** कर लिया।

वैर सिंह

- उपेंद्र के पुत्र वैर सिंह उनके अगले उत्तराधिकारी बने।
- परमारों की **प्रारंभिक राजधानी उज्जैन** थी, लेकिन वैर सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान, परमारों ने अपनी राजधानी को **उज्जैन से धार में स्थानांतरित** कर दिया।
- मालवा के परमार वंश के **सियक प्रथम** का नाम **उदयपुर प्रशस्ति** में मिलता है।
- सियक प्रथम के बाद 893 ई. तक उदयपुर प्रशस्ति में किसी राजा का उल्लेख नहीं मिलता।

कृष्णराज या वाक्पति I

- यह प्रतिहार नरेश **महेंद्र पाल** (892-908 ई.), **भोज II** और **महिपाल** (912-942 ई.) तीनों के समकालीन थे।
- इनका नाम **'उदयपुर प्रशस्ति'** और '**नवसाहसांकचरित**' दोनों में वर्णित है।
- वाक्पतिप्रथम ने '**परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर**' की शाही उपाधि धारण की।

हर्ष / सियक II

- उन्हें "**सिन्ह दत्त भट्ट**" भी कहा जाता था।
- परमार वंश का पहला स्वतंत्र राजा **सियक द्वितीय** था।
- राष्ट्रकूट दक्षिण में केंद्रित थे और **चोल संघर्ष** में व्यस्त थे।
- ऐसे समय का लाभ उठाकर सियक द्वितीय ने तुरंत 949 ई. में '**महाराजधिराजपति**' और '**महामंडलिक चूड़ामणि**' की उपाधि धारण की
- नवसाहसांकचरित' में **'सियक द्वितीय'** की विजयों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। उसने हूणों को भी पराजित किया।
- '**हूणमंडलिक**' की स्थिति परमार और चेदि वंश के राज्यों के बीच यानी नर्मदा के उत्तर में आधुनिक **'होशंगाबाद'** और **'महू' के बीच** थी।
- चंदेल के **खजुराहो शिलालेख** (956 ई.) से पता चलता है कि यशोवर्मन चंदेल ने मालवा राजा को पराजित किया।
- इस समय चंदेल का साम्राज्य विदिशा तक फैल गया और वह मालवा की सीमा में प्रवेश कर गया।
- सीयक ने अंतिम काल में राष्ट्रकूटो की राजधानी 'मान्यखेत पर अधिकार कर लिया।

वाक्पति द्वितीय या मुंज या उत्पल (974 से 994 ई.)

- **सिंधुराज** (997-1000 ई.) - यह मुंज का छोटा भाई था, लेकिन मुंज को सिंधु राज के पुत्र भोज से अधिक लगाव था और उसे युवराज के रूप में नियुक्त किया।
- सिंधुराज ने **नवसहसांक**, **नवीनसाहसंक**, **कुमार नारायण**, **अवंतीश्वर**, **परमार महाभृत**, **मालव** राज की उपाधि धारण की।
- सिंधुराज ने हूणों पर विजय प्राप्त की। **बड़नगर प्रशस्ति** (1151 ई.) में इसका विशेष उल्लेख मिलता है।

राजा भोज (1000-1055 ई.)

- वह **कला और संस्कृति** के महान **संरक्षक** थे।
- भोजपुर **शिव मंदिर** का निर्माण किया।
- धार में संस्कृत सीखने के लिए **भोजशाला** खोली।
- इन्होंने चंदेल राजा विद्याधर पर हमला किया, लेकिन 1008 ई. में हार गये।
- भोज ने मोहम्मद गजनवी के खिलाफ **हिंदुशाही राजा आनंदपाल** की मदद की
- 1047 में, चालुक्य राजकुमार **सोमेश्वर प्रथम** ने भोज को हराया और धार को लूट लिया, जिसपे जल्द ही पुनः कब्जा कर लिया गया।
- उन्होंने भोपाल में **भोजताल झील** का निर्माण कराया।
- फरिश्ता के अनुसार राजा वर्ष में दो बार भोज का आयोजन करता था, जो 40 दिनों तक चलता था।
- **रोहक** इसके प्रधान मंत्री थे और **कुलचंद्र**, **शाढ़** तथा **सुरादित्य** उनके तीन महान सेनापति थे।
- **राजा भोज के साहित्य - तत्त्व प्रकाश**; **समरगढ़**-**सूत्रधार**, **सिद्धान्त संग्रह**

महलकदेव

- अंतिम परमार राजा महलकदेव था जिसे **आइन-उल-मुल्क** (अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति) द्वारा 1305 ई.में पराजित हुआ।
- राजा भोज के बाद जयसिंह प्रथम, उदयादित्य, लक्ष्मदेव, नर्मदेव, यशोवर्मन, जयवर्मन, परमार महा कुमार आदि राजा बने।
- इसके बाद परमार साम्राज्य कई छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया, **अंतिम राजा भोज द्वितीय** था, जिसके बाद वर्ष 1305 की तारीख मालवा में **महलकदेव के शासनकाल** के लिए जानी जाती है।
- **सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी** ने मालवा पर आक्रमण किया और उसे दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

साहित्य, कला और वास्तुकला

- **वाक्पति द्वितीय मुंज** एक कवि-हृदय राजकुमार थे, **यशोरुपवलोक** के लेखक धनिक, **नवसाहसांकचरित** के लेखक पद्मगुप्त, **दशरुपक** के लेखक धनंजय, उनके दरबार में रहते थे।
- राजा मुंज को **कविवृष** भी कहा जाता था।
- **भोज कालीन** या भोज के नाम से उपलब्ध ग्रंथों की सूची हाल ही में **भगवती लाल राजपुरोहित** की पुस्तक भोजराज में प्रकाशित हुई थी जो इस प्रकार है
  1. **साहित्य शास्त्र**: सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगार प्रकाश
  2. **साहित्य**: चंपू रामायण, श्रृंगार मंजरी कथा, सुभाषित प्रबंध, विद्या विनोद, शालिकथा, अवनिकुर्मसतर्क, कोदण्डकाव्य, महाकाली विजय, वाग्यदेवी स्तुति
  3. **व्याकरण**: प्राकृत व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण
  4. **कोष**: नामनालिका, अम्खायाख्या, अनेकार्थकोश
  5. **संगीत**: गीत प्रकाश
  6. **इतिहास** :- संजीवनी
  7. **दर्शन**: न्यायवार्तिक - तत्व प्रकाश, सिद्धान्त संग्रह, सिद्धान्त सार विधि, राज मार्तंड, योग सूत्र वृत्ति, शिव तत्व रत्न कालिका, तत्व चंद्रिका
  8. **खगोल विज्ञान और ज्योतिष**: आदित्य प्रताप सिद्धान्त, राजमार्तंड, राजमृगांक, विद्वज्ञानवल्लभ (प्रश्न विज्ञान)

कच्छपघात राजवंश

- कच्छपघात वंश **मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग** का एक महत्त्वपूर्ण राजवंश था।
- इसका **मूल स्थान गोपाचल क्षेत्र** है जिसके अंतर्गत **मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर और दतिया** जिले के क्षेत्र शामिल हैं।
- अतीत में, कच्छपघात **गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत** के रूप में काम करता है।

देव वर्मन

- **ग्वालियर** में **तोमर राज्य की** स्थापना की।
- **चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जीत महल, जैत या जीत स्तंभ और मंडेर दुर्ग** का निर्माण करवाया।
- **कीर्तिपाल** के शासन काल में **बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर** आक्रमण किया।

तोमर वंश

- **राजा मानसिंह तोमर वंश** का सबसे **शक्तिशाली** राजा था।
- **राजा मानसिंह को** अपने शासनकाल में **बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी** के **आक्रमणों** का सामना करना पड़ा था।
- 1517 ई. में, **इब्राहिम लोदी ने** ग्वालियर पर आक्रमण किया और **ग्वालियर का किला** जीता, इस युद्ध में **राजा मानसिंह की मृत्यु** हो गई।
- **राजा मानसिंह द्वारा** अपने शासनकाल में बनवाया गया **मान मंदिर और गुजरी महल** इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।
- मान सिंह के पुत्र **विक्रमादित्य तोमर वंश के** अंतिम शासक थे।
- **पानीपत की** पहली लड़ाई में **इब्राहिम लोदी** के साथ **विक्रमादित्य** मारा गया था।
- इस प्रकार **ग्वालियर** राज्य के **तोमर वंश का अंत** हो गया।
- **कोहिनूर** नाम का विश्व प्रसिद्ध **हीरा** जो वर्तमान में **इंग्लैंड के महल** को सुशोभित करता है, ग्वालियर के तोमर वंश का खजाना है।
- यह तोमर **जागीरदार अजीत सिंह** द्वारा **मुगल वंश** को **आगरा किले** और खुद पर **हमला** न करने की शर्त के रूप में दिया गया था।

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश और उनके क्षेत्र	
राजवंश	**क्षेत्र**
चंदेल राजवंश	बुंदेलखंड
तोमर राजवंश	ग्वालियर
परमार राजवंश	मालवा (धार)
बुंदेल राजवंश	बुंदेलखंड
होल्कर राजवंश	मालवा (इंदौर)
सिंधिया राजवंश	ग्वालियर
कारुष राजवंश	बघेलखंड
चंद्र राजवंश	बघेलखंड से बुंदेलखंड
यादव वंश	चंबल बेतवा की नदियों का मध्य भाग
शुंग राजवंश	विदिशा
नागवंश	विदिशा - ग्वालियर
बोधि राजवंश	जबलपुर (त्रिपुरी/तेवर)
मघ राजवंश	बघेलखंड
अमीर राजवंश	अहिश्वश (विदिशा/झाँसी)
वाकाटक वंश	विंध्य प्रदेश
औलिकर राजवंश	दासपुर (मंदसौर)
मौखरी वंश	मालवा (दासपुर, मंदसौर)
परिव्राजक राजवंश	बुंदेलखंड
शैल राजवंश	महाकौशल
पांड्य राजवंश	मैकाल प्रदेश (अमरकंटक)

चंदेल राजवंश

- **राजधानी: खजुराहो**
- स्थापना: 871
- **चंद्रोदय ऋषि** के वंशज
- पहला राजा: **नन्नुक**
- नन्नुक के पौत्र **जयसिंह** के नाम पर इसका नाम **जेजाकभुक्ति** रखा गया।
- **हर्षदेव** चंदेल वंश के पहले **महत्त्वपूर्ण राजा** थे, जिनके शासन काल में चंदेल वंश को **उत्तर भारत के शक्तिशाली राजवंशों** में गिना जाता था।
- हर्षदेव (905 से 925) के बाद उनका पुत्र **यशोवर्मन** गद्दी पर बैठा, जिसने **कन्नौज के प्रतिहारों को** समाप्त कर **राष्ट्रकूट से कालिंजर** का किला जीत लिया।
- यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने **खजुराहो के प्रसिद्ध विष्णु मंदि**र का निर्माण कराया।

धंग देव (950 से 1007)

- **प्रतिहार शक्ति** के कमजोर होते ही इसने एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। **धंगदेव ने 'महाराजाधिराज'** की **उपाधि** धारण की।
- उसका राज्य **कालिंजर से मालव नदी** (बेतवा), मालव नदी से **कालिंदी**, कालिंदी से **चेदि** और चेदि से **गोपाद्रि (ग्वालियर)** तक था।
- इसने शुरू में **कालिंजर को** अपनी **राजधानी** बनाया, फिर **खजुराहो को** अपनी **राजधानी** बनाया।
- इसने **भटिंडा के** शाही शासक **जयपाल को सुबुक्तगीन के खिलाफ** सैन्य सहायता भेजी।
- **धंग** ने **खजुराहो के** अधिकांश **मंदिरों का** निर्माण कराया, इसने **जैन समुदाय** के लोगों को खजुराहो में मंदिर बनाने की अनुमति भी दी।
- **खजुराहो में** दो प्रमुख - **पारसनाथ और विश्वनाथ मंदिर** हैं।
- उनके शासनकाल के दौरान, **राजा धंग** द्वारा खजुराहो में **जगदंबी नामक वैष्णव मंदिर** और **चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर** का निर्माण किया गया था।
- उन्होंने प्रयाग में **गंगा-यमुना के पवित्र संगम में** अपना शरीर त्याग दिया।

विद्याधर (1017 से 1029 ई.)

- **महमूद गजनी की** महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक **विरोध** किया।
- **परमार शासक भोज** और **त्रिपुरी कलचुरी शासक गंगदेव** भी पराजित हुए।
- **विद्याधर के बाद** उसका पुत्र **विजयपाल** गद्दी पर बैठा, लेकिन बाद में उसे **गंगदेव की अधीनता** स्वीकार करनी पड़ी।
- इस वंश का **अंतिम योग्य शासक परमार्दिदेव** (1165 ई. से 1203 ई.) (परमल) था।
- उन्होंने **दशैन अधिपति** की **उपाधि** धारण की
- उन्हें 1182 ई. में **पृथ्वीराज चौहान** और 1203 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने हराया था।
- **कालिंजर के युद्ध** में **परमार्दिदेव** की मृत्यु हो गई।
- **आल्हा और उदल परमार्दिदेव के दरबारी** थे।

3 CHAPTER 13-15वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- 1019 ई. में, ग्वालियर पर महमूद गजनवी द्वारा अधिकार कर लिया गया ।
- 1195 ई. में मोहम्मद गौरी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- 1231 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।

बुंदेलखंड अभियानD

- मध्य प्रदेश में गौरी के शासनकाल के दौरान कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुंदेलखंड पर विजय प्राप्त की।
- उसने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराया और कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर अधिकार कर लिया।
- 1202 ई. में, ऐबक ने चंदेल के अधीन एक शक्तिशाली स्थान कालिंजर के किले की घेराबंदी की।
- परमर्दिदेव ने कुछ समय तक इसका विरोध किया, लेकिन उन्हें कुछ धन और हाथियों सहित किले को समर्पित करना पड़ा। लेकिन संधि की शर्तें पूरी होने से पहले ही परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई।
- चंदेल के नए शासक अजयपाल के द्वारा अपने शासन की स्थापना के बावजूद तुर्कों का आक्रमण जारी रहा, लेकिन सूखे के कारण किले के सभी जल स्रोत सूख गए। इस कारण अजयपाल की सेना को बिना शर्त आत्मसमर्पण करना पडा।
- इस तरह लंबे शासनकाल के बाद चंदेल साम्राज्य का पतन हो गया।
- कुतुबुद्दीन ने कालिंजर का किला हसन अर्नाल को सौंप दिया।

मालवा अभियान

- मालवा में **कुतुबुद्दीन ऐबक का** पहला **आक्रमण उज्जैन पर** हुआ था।
- 1196-1197 ई. में **ऐबक ने उज्जैन को लूटा,** लेकिन यह जीत भी स्थायी साबित नहीं हुई।
- 1210 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु** के बाद, **आराम शाह** शासक बने, इस दौरान **हिंदुओं ने** अपनी **सत्ता** वापस प्राप्त कर ली थी ।
- 1231 ई. में, **इल्तुतमिश ने ग्वालियर को** घेर लिया, **प्रतिहार शासक मलयबर्मन** ने लगातार लड़ाई लड़ी । इस **लड़ाई** में **11 महीने तक लम्बी घेराबंदी** चली।
- अंत में **प्रतिहार शासक मलयबर्मन** की हार हुई, किले की **महिलाओं ने** तालाब के पास **जौहर** कर लिया। इस तालाब को **जौहर ताल** के नाम से जाना जाता है।

इल्तुतमिश

- **ग्वालियर विजय** के दो वर्ष बाद **मलिक नुसरत उद्दीन तैयती** को ग्वालियर किले का मुखिया बनाया गया।
- इस प्रकार **गुना-चंदेरी का क्षेत्र** इल्तुतमिश के कब्जे में चला गया।
- **इल्तुतमिश ने कालिंजर** जीतने के लिए **बयाना और ग्वालियर के राज्यपाल मलिक तैयती** को सेना के साथ रवाना किया।
- **चंदेल राजा त्रिलोक्यवर्मन** तुर्की सेना का मुकाबला नहीं कर सके और **कालिंजर** को छोड़कर भाग गए।
- 1234 ई. में, इल्तुतमिश ने अपने **मालवा अभियान** के दौरान **भेलसा** पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया।
- भेलसा पर कब्जा करने के बाद, वह **उज्जैन** की ओर चला गया, इस समय **मालवा में देवपाल परमार** शासन कर रहा था।
- **तबकात-ए-नासिरी के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज** लिखते हैं कि **इल्तुतमिश ने विक्रमादित्य** की मूर्ति और **महाकाल के शिवलिंग** को **दिल्ली** में लूटा था, जिसकी पुष्टि बाद में **फरिश्ता ने** अपनी पुस्तक में की थी।

बलबन का कालिंजर अभियान

- 1251 ई. में**, बलबन** ने **उलूग खान** के नेतृत्व में **कालिंजर** पर हमला किया।
- नवंबर 1251 ई. में ही बलबन ने **चंदेरी के राजा चहाड़देव** या **ज़हरदेव** और **मालवा के** एक शक्तिशाली **शासक नरवर** पर हमला किया था।
- 1251 ई. में, **बलबन** ने **नसीरुद्दीन के शासनकाल के दौरान ग्वालियर** पर **आक्रमण** किया, लेकिन अपनी सत्ता कायम रखने में सक्षम नहीं रहा।

मध्य प्रदेश में अलाउद्दीन खिलजी का अभियान

- **अलाउद्दीन** ने **सुल्तान जलालुद्दीन** से **चंदेरी और विदिशा** (भीलसा) पर हमला करने की अनुमति माँगी।
- **1292** ई. **में चंदेरी** पर अधिकार कर लिया और फिर **भीलसा** पर **आक्रमण** किया।
- **अलाउद्दीन** ने **1234** ई. **में देवगिरि** के लिए अभियान चलाया, जिसके लिए वह **मालवा** होते हुए निकला। **देवगिरि के अभियान** से लौटते समय उसने **खानदेश** पर भी **आक्रमण** किया। उस समय **खानदेश** एक **सरदार** के अधीन था जो **खानदेश का राजा** कहलाता था और संभवत: वह **असीरगढ़ का चौहान शासक रावचंद** था, ऐसा भी माना जाता है कि उसके पास **40 से 50 हजार की सेना** थी।
- **रावचंद** और उनके **पूरे परिवार** को सिवाय उनके एक बेटे को छोड़कर सभी को **मौत के घाट** उतार दिया गया।
- **1305 ई. में**, **अलाउद्दीन ने आइन-उल मुल्क** के नेतृत्व में **मालवा पर हमला** करने के लिए **10,000 सैनिकों की एक विशाल सेना** भेजी।
- तुर्की सेना और **परमार सेनापति हरमंद कोका** के बीच एक भीषण संघर्ष में, कोका मारा गया और तुर्कों की विजय हुई।
- कोका के सिर को **दिल्ली** भिजवाया गया, जहाँ उसे महल के दरवाजों के नीचे **घोड़े के पैरों से** कुचल दिया गया।
- **23 नवंबर 1305** ई. को **अलाउद्दीन की सेना ने मांडू पर** कब्जा कर लिया।
- **मांडू के पतन** के बाद, **उज्जैन, धार, चंदेरी, शाजापुर, सारंगपुर, मंदसौर, रतलाम** आदि के आस-पास के सभी क्षेत्र **दिल्ली सल्तनत** के नियंत्रण में आ गए।
- इसके बाद **अलाउद्दीन ने मंदसौर** शहर के पूर्व में एक **किले की नींव** भी रखी थी।
- **आइन-उल-मुल्क** को **मालवा का इक्तादार** नियुक्त किया गया और इस क्षेत्र को **धार और उज्जैन** प्रांत के रूप में नामित किया गया।
- इस प्रकार **मालवा का क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन** आ गया और **अलाउद्दीन के दक्षिणी अभियानों** की सफलता की कुंजी साबित हुआ।
- 1310 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ने **देवगिरि के अभियान** से लौटते हुए **धार** में निवास किया। दिल्ली से निकटता के कारण**, ग्वालियर खिलजी के नियंत्रण में** रहा।

मध्य प्रदेश में तुगलक

- **दमोह शिलालेख** इस बात की पुष्टि करता है कि **तुगलक काल** के दौरान विशेष रूप से **गयासुद्दीन और मोहम्मद तुगलक** के समय में इस क्षेत्र पर **मुस्लिम प्रभुत्व** मजबूत रहा था। वर्ष **1324 ई. के बटियागढ़ अभिलेख (दमोह)** से स्पष्ट है कि **गयासुद्दीन तुगलक** किस काल में इस क्षेत्र में कार्यरत था।
- **बुंदेलखंड में खजुराहो, दमोह, छतरपुर** आदि क्षेत्र **दिल्ली सल्तनत का हिस्सा** रहे **इब्नबतूता** पुष्टि करते है कि **ग्वालियर, चंदेरी, नरवर** उस अवधि के दौरान सल्तनत का हिस्सा बने रहे।
- **सुल्तान गयासुद्दीन** के बाद **मालवा में आइन-उल-मुल्क** को उसी पद पर रखा गया।
- बाद में, आइन-उल-मुल्क को मालवा से **अवध प्रांत** में स्थानांतरित कर दिया गया और **कुतलग खान** को **देवगिरि** के साथ-साथ **मालवा की कमान** दी गई।
- मोहम्मद तुगलक के समय में **जोलिक खान को चंदेरी का प्रशासक** बनाया गया था।
- 1335 से 1336 ई. में **मालवा में भीषण अकाल** पड़ा। **सुल्तान मोहम्मद ने** उस समय **देवगिरि** से लौटते हुए **मालवा में** विश्राम किया था।

- **आइन-उल-मुल्क मुल्तानी** और उनके भाइयों ने **अवध मालवा** से धन और वस्त्र भेजकर **अकाल पीड़ित** लोगों की मदद की।
- **अजीज खम्मर** की नियुक्ति **मालवा में 1344 से 1345 ई.** में हुई थी।
- **अजीज खम्मर** के **मालवा में** कार्यभार संभालने के बाद, **अमीर-ए-सदा** को मालवा के **100 गाँवों** के **राजस्व संग्रह** के लिए बारीकी से निगरानी और नियंत्रण करने के लिए **राजस्व अधिकारी** के रूप में नियुक्त किया गया ।
- अजीज खम्मर ने **धार के अमीर-ए-सदा** को कैद कर मौत की सजा सुनाई थी।
- इसने अन्य अधिकारियों को आत्मरक्षा के लिए विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया, इस घटना के जवाब में, 1346 ई. में **गुजरात के अमीर-ए-सदा ने** अजीज खम्मर को चुनौती दी और उसे युद्ध में मार डाला।

फिरोज शाह तुगलक

- **निजामुद्दीन को मालवा में** 1351 ई. में नियुक्त किया गया था, मालवा के अलावा **बुंदेलखंड का क्षेत्र** भी फिरोज शाह तुगलक के पास था, क्योंकि 1383 ई. के **फारसी शिलालेख** में **दमोह** क्षेत्र में **तुगलक शासक** की सत्ता का उल्लेख है।
- **देव वर्मा फिरोज शाह तुगलक** के समय **चंबल क्षेत्र के शासक** थे।
- 1353 ई. में **तिरहुत अभियान** के बाद, उन्होंने **देव वर्मा को जागीर** दी और उन्हें **राय की उपाधि** दी।
- 1375 ई. में देव वर्मा की मृत्यु हो गई।
- उनके **उत्तराधिकारी वीर सिंह देव** ने **ग्वालियर पर कब्जा** कर लिया और एक **स्वतंत्र शासक** बन गए।
- **फिरोज तुगलक** के समय में **चंदेरी, एरण और दतिया** के आस-पास का क्षेत्र **दिल्ली सल्तनत** के अधीन था।
- उल्लेखनीय है कि **मालवा के सुल्तानों ने बुंदेलखंड के सागर-दमोह** क्षेत्र पर भी कब्जा कर लिया था।
- **महमूद शाह** 1436 ई. में **मालवा की गद्दी** पर बैठा और मालवा के अन्य सुल्तानों ने समय-समय पर **दमोह जिले** के क्षेत्र पर शासन किया।
- उनके शासन काल में **स्थानीय प्राधिकरण का मुख्यालय बटोहागढ़ से दमोह में स्थानांतरित** कर दिया गया था।
- दमोह में मिले **1480** ई. **के फारसी शिलालेख** से पता चलता है कि उस समय जो **गयासुद्दीन** यहाँ सत्ता में था, वह **मालवा का गयासुद्दीन खिलजी** था।
- इसी प्रकार **दमोह जिले में 1505** ई. **का एक सती अभिलेख** प्राप्त हुआ जिसमें **गयासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन** का उल्लेख है।
- 1512 ई. के एक अन्य शिलालेख में **नसीरुद्दीन के पुत्र महमूद शाह द्वितीय** का उल्लेख है।
- **1531** ई. **में महमूद द्वितीय की मृत्यु** हो गई और दमोह क्षेत्र में **मालवा सुल्तानों का शासन समाप्त** हो गया।

मालवा सल्तनत (1401-1561)

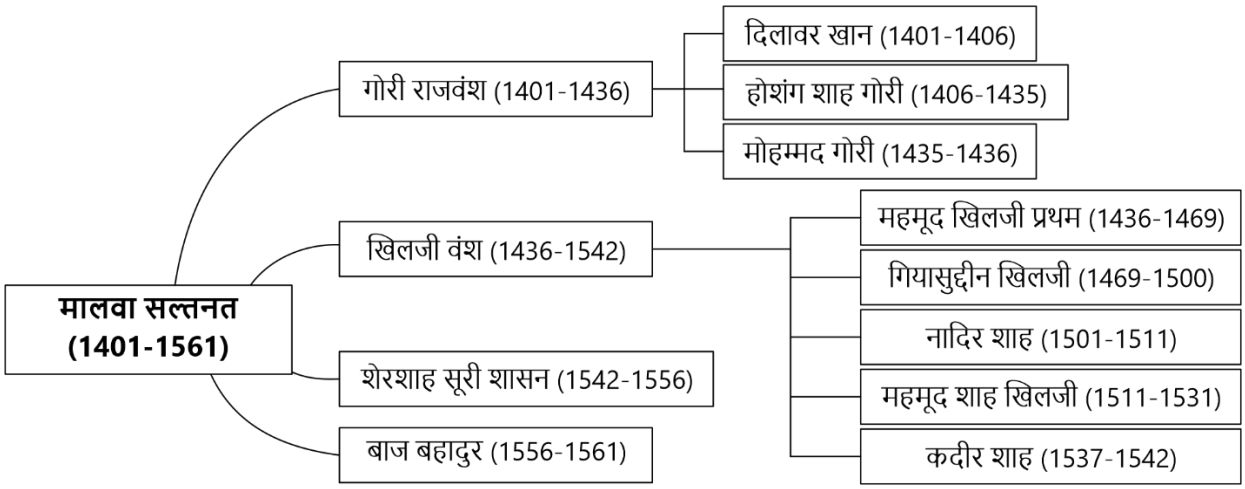

- **दिलावर खान गौरी वास्तविक नाम - हुसैन खान या अमीन खान** द्वारा **मालवा में गौरी राजवंश** की स्थापना के साथ ही अन्धकार युग की समाप्ति हुई। **सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक ने दिलावर खान गौरी को** 1390 ई. में **मालवा का सूबेदार** नियुक्त किया**। फिरोज शाह तुगलक** ने उसका नाम **दिलावर खान** रखा।
- **1401** ई. **में दिलावर खान ने स्वतंत्र मालवा राजवंश** की स्थापना की।